विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

पहली तिमाही की विकास दर उत्साहजनक, तो डरा रही हैं भविष्य की चुनौतियां

इसमें कोई दो राय नहीं कि विपरीत हालातों के बावजूद देश की आर्थिक विकास दर के आंकड़े लगातार उत्साहजनक सामने आ रहे हैं। खास बात यह है कि चालू वित्तीय वर्ष के पहली तिमाही के आंकड़ें आशा से अधिक बेहतर रहने के साथ ही पिछले वित्तीय वर्ष की चारों तिमाही से अधिक रहे हैं। यह सब तो तब है जब दुनिया के देश अभी आर्थिक संकट के दौर से ही गुजर रहे हैं। पड़ौसी पाकिस्तान के हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं तो अन्य देशों की अर्थ व्यवस्था भी हालातों से जूझ रही है। दरअसल कृषि क्षेत्र बड़ा सहारा बन कर उभर कर आता रहा है। हांलाकि आने वाली तिमाही कृषि क्षेत्र के लिए अनुकूल इसलिए नहीं मानी जा सकती कि देश में मानसून धोखा देता दिखाई दे रहा है। देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून के आंकड़ें निराशाजनक आ रहे हैं। यह सर्वविदित है कि खरीफ की फसल लगभग पूरी तरह मानसून पर निर्भर करती है और मानसून ने जिस तरह से अगस्त माह में बेरुखी दिखाई है उससे कृषि जगत में निराशा आई है। मौसम विज्ञानियों की माने तो सितंबर माह में भी मानसून के जो संकेत मिल रहे है वह निराशाजनक ही आ रहे हैं। किसानों की ललाट पर चिंता की रेखा साफ दिखाई दे रही है। अब तो मानसून की बेरुखी से सरकार भी चिंता में आ गई है।

दरअसल कृषि क्षेत्र इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि देश में सर्वाधिक रोजगार के अवसर कृषि क्षेत्र से ही आते हैं तो कृषि क्षेत्र ने भारतीय अर्थ व्यवस्था को बड़ा सहारा दिया है। कोरोना काल में कृषि क्षेत्र ने अर्थ व्यवस्था ही नहीं बल्कि देश के लोगों खासतौर से गरीब लोगों को जो राहत दी है वह अतुलनीय रही है। आज भी देश के गोदाम अन्न धन से भरे हैं तो देश कम से कम अन्नधन को लेकर तो बेफिक्र है। हांलाकि कृषि क्षेत्र के लिए चुनौती भरा समय आ गया है पर देश के अन्नदाता की मेहनत पर सबको भरोसा है। दरअसल चालू वित वर्ष की पहली तिमाही के जो आंकड़ें एनएसओ ने जारी किए हैं वह उत्साहवर्द्धक है। जारी आंकड़ों के अनुसार जून 23 तिमाही में कृषि क्षेत्र में मूल्य सवंर्द्धन 3.5 फीसदी रहा है जो एक साल पहले की इसी अवधि के 2.4 प्रतिशत से कहीं अधिक है। यह परिणाम समग्र प्रयासों से ही संभव हो सके हैं। समग्र रुप से देखा जाए तो अप्रेल-जून तिमाही जीडीपी में वृद्धि दर 7.7 प्रतिशत रही है हांलाकि आरंभिक अनुमान 8 प्रतिशत से नीचे रहने के बावजूद अर्थ व्यवस्था के सकारात्मक दिशा में बढ़ने के तो स्पष्ट संकेत हैं ही।

भले ही हमारी आर्थिक विकास दर संभली हुई ही नहीं अपितु बढ़ रही हैं। पर चिंता के कारण यथावत है। जो हालात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिल रहे हैं उससे अधिक आशा की जानी बेमानी ही होगी। अपुित अर्थ व्यवस्था के क्षेत्र में जो सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं उसे सकारात्मक ही माना जाएगा क्योंकि दुनिया के हालात जस के तस हैं।

देखा जाए तो इस दौरान रियल एस्टेट, फायनेंस और सर्विस सेक्टर में भी अच्छी विकास दर रही है। अब देश में त्यौहारी सीजन आरंभ हो जाने से यह माना जा रहा है कि दिसंबर तक देश की अर्थ व्यवस्था कुलाचें भरने की स्थिति में रहेगी। बाजार में मांग बढ़ेगी तो इससे उत्पादन और वितरण दोनों ही क्षेत्रों में अर्थ व्यवस्था में उछाल आयेगा। कोराबारियों की माने तो त्यौहारी सीजन में बाजार और अधिक गुलजार रहेगा और अर्थ व्यवस्था को पंख लगेंगे। हांलाकि मानसून की बेरुखी का असर भी देखने को मिल सकता है। ऐसे हालातों में कृषि से इतर अन्य सेक्टरों को बेहतर परिणाम देने होंगे ताकि आर्थिक विकास की दर बनी रहे। थोड़ा चिंतनीय इसलिए अवश्य है कि पहली तिमाही में निर्यात और विनिर्माण क्षेत्र में सुस्ती दिखाई है। ऐसे में चुनौतियां और अधिक हो जाती है।

हांलाकि माना यह जा रहा है कि मानसून की बेरुखी के बावजूद अर्थ व्यवस्था पर इसलिए ज्यादा असर नहीं पडना चाहिए क्योंकि सरकार ने खेती किसानी के लिए योजनावद्ध प्रयास किए हैं और सिंचाई सुविधा का विस्तार करने से फसलों को बचाया जा सकेगा। हांलाकि यह तात्कालिक समाधान ही हैं क्योंकि इससे नकारा नहीं जा सकता कि अर्थ व्यवस्था को मानसून अवश्य प्रभावित करता है। बस उस असर को कम करने के प्रयास हो सकेंगे। विश्व व्यापी खाद्य संकट का असर दुनिया के देशों में साफ दिखाई दे रहा है। हमारे यहां से भी गेहूं और चावल के निर्यात को हतोत्साहित किया गया है। पिछले दिनों टमाटर के भावों की नई ऊंचाइयों को देशवासी देख चुके हैं। टमाटर दो सौ पार तो अदरक को चार सौ का आंकड़ा छूते देखा है। लगभग सभी खाद्य पदार्थों के भावों में तेजी देखने को मिल रही है। रोजमर्रा के खर्च खासतौर से रसोई के खर्च में बढोतरी चिंता का सबब बनती जा रही है।

भले ही हमारी आर्थिक विकास दर संभली हुई ही नहीं अपितु बढ़ रही हैं। पर चिंता के कारण यथावत है। जो हालात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिल रहे हैं उससे अधिक आशा की जानी बेमानी ही होगी। अपुित अर्थ व्यवस्था के क्षेत्र में जो सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं उसे सकारात्मक ही माना जाएगा क्योंकि दुनिया के हालात जस के तस है। देश में जहां चुनावों की तैयारी चल रही हैं वहीं वन नेशन वन इलेक्शन से नई परिस्थितियां आने वाली है। चुनावों के बाद सामान्यत: महंगाई बढ़ती ही देखी गई है तो दूसरी और विदेशों के हालात देखे तो रुस यूक्रेन युद्ध समाप्ति के दूर-दूर तक कोई आसार नहीं दिखाई दे रहे हैं। चीन की बौखलाहट सामने हैं तो अमेरिका और योरोपीय देशों के आर्थिक व राजनीतिक हालात कोई आशाजनक नहीं दिखाई दे रहे हैं। इन सबके बीच प्राकृतिक आपदाओं और आतंकवादी गतिविधियों का दौर जारी है। ऐसे में आने वाले दिनों में दुनिया के देशों के आर्थिक हालात को लेकर कोई आशा नहीं की जा सकती।

ऐसे में चालू साल की पहली तिमाही में बेहतर विकास दर के बाद अब अधिक चुनौतियां इसलिए सामने आ गई है कि मानसून, चुनाव, त्यौहार और अन्य कारण आने वाले दिनों में अर्थ व्यवस्था के लिए चुनौती पूर्ण होंगे और ऐसे में अभी से संभल कर चलना होगा ताकि विकास दर के स्तर को बनाये रखा जा सके। यह सरकार और अर्थशास्त्रियों के सामने बड़ी और गंभीर चुनौती होगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

भारत: विश्व ऊर्जा परिदृश्य एवं जी-20

जी-20 के सदस्य देशों के नेता जब इस महीने की 9 और 10 तारीख को मिलेंगे, तो उनकी प्रमुख चिंता जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ऊर्जा परिवर्तन में तेजी लाने की होगी। जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न तात्कालिक खतरे के साथ ही साथ कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन पर अंकुश लगाने के लिए त्वरित गति से जीवाश्म ईंधन से गैर-जीवाश्म ईंधन का रुख करने की तत्काल आवश्यकता और वैश्विक तापमान में वृद्धि को पूर्व औद्योगिककरण स्तर से 1.5 डिग्री तक सीमित करने के प्रयास को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है।

भारत दुनिया में सबसे कम प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वाले देशों में से एक है। हमारा प्रति व्यक्ति उत्सर्जन 2.40 टीसीओ2ई (टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य) है, जबकि वैश्विक औसत 6.3 टीसीओ2ई है। कार्बन डाइऑक्साइड भार में हमारा योगदान केवल 4 प्रतिशत है जबकि हम दुनिया की आबादी का 17 प्रतिशत हिस्सा हैं। हम एकमात्र प्रमुख अर्थव्यवस्था हैं जिसकी ऊर्जा परिवर्तन गतिविधियां तापमान में 2 डिग्री से कम वृद्धि के अनुरूप हैं। सीओपी 21 पेरिस में, हमने वर्ष 2030 तक 40 प्रतिशत गैर-जीवाश्म बिजली उत्पादन क्षमता हासिल करने का संकल्प लिया था, इस लक्ष्य को हमने नौ साल पहले 2021 में ही हासिल कर लिया। हमारी गैर-जीवाश्म उत्पादन क्षमता 187 गीगावॉट है और 103 गीगावॉट निर्माणाधीन है। ग्लासगो में सीओपी 26 में, हमने 2030 तक 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म बिजली उत्पादन तक पहुंचने की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। हमने सीओपी 21 में 2030 तक उत्सर्जन गहनता में 33 प्रतिशत की कमी लाने का संकल्प लिया था और 2019 में इस लक्ष्य को हासिल कर लिया। सीओपी 26 में हमने 2030 तक उत्सर्जन गहनता में 45 प्रतिशत कमी लाने की नई प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

ऊर्जा दक्षता से संबंधित कदम उठाने की दिशा में हम अग्रणी हैं। हमारे उद्योग-केंद्रित प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (पीएटी) कार्यक्रम के माध्यम से हमने कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में सालाना 106 मिलियन टन की कमी की है। उपकरणों पर स्टार लेबलिंग से संबंधित हमारे कार्यक्रम से कार्बन उत्सर्जन में सालाना 57 मिलियन टन, जबकि हमारे एलईडी कार्यक्रम से हर साल 106 मिलियन टन की कमी आई है। ऊर्जा तक पहुंच एसडीजी-7 में सबसे महत्वपूर्ण है। विस्तार की दिशा में किए गए हमारे अभूतपूर्व प्रयासों ने 18 महीनों के भीतर हजारों गांवों और 26 मिलियन घरों को ऊर्जा उपलब्ध कराई है। पिछले नौ वर्षों में, हमने अपनी बिजली उत्पादन क्षमता में 190 गीगावॉट की वृद्धि की है और 1,97,000 सर्किट किलोमीटर ट्रांसमिशन लाइनें स्थापित कर दुनिया का सबसे बड़ा एकीकृत ग्रिड बनाया है। हमने बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल की है। ऊर्जा परिवर्तन के संबंध में दुनिया के सामने कई चुनौतियां हैं। चौबीसों घंटे नवीकरणीय ऊर्जा प्राप्त करने के लिए भंडारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज विश्व में बैटरी भंडारण विनिर्माण क्षमता केवल 1163 जीडब्ल्यूएच है। भंडारण की लागत वर्तमान में बहुत अधिक है। हम 1000 एमडब्ल्यूएच भंडारण के लिए बोली लेकर आए हैं, जो दुनिया की सबसे बड़ी बोलियों में से है, और हमने बैटरी विनिर्माण क्षमता स्थापित करने के लिए कदम उठाए हैं। परमाणु ऊर्जा निरंतर, स्वच्छ बिजली उत्पादन प्रदान करती है। हालांकि, हमें छोड़कर अधिकांश विकासशील देशों के पास महत्वपूर्ण परमाणु क्षमताओं का अभाव है। छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर इस दिशा में समाधान हो सकते हैं, लेकिन यह अभी तक विकास के चरण में है।

दूसरा समाधान कार्बन कैप्चर, यूटिलाइजेशन एंड स्टोरेज (सीसीयूएस) है लेकिन यह भी शुरुआती चरणों में है। अधिग्रहण का प्रश्न लागत के प्रश्न की तरह ही बरकरार है। एक अन्य चुनौती आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने की है। वर्तमान में, सौर सेल और मॉड्यूल विनिर्माण क्षमता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा एक ही देश तक केंद्रित है। हमने बड़े पैमाने पर विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए एक उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना (पीएलआई) की स्थापना की और 2026 तक 100 गीगावॉट विनिर्माण क्षमता हासिल करने की राह पर हैं। इसी तरह, भंडारण के लिए लिथियम-आयन बैटरी विनिर्माण क्षमता का अधिकांश हिस्सा एक ही देश तक केंद्रित है। सौभाग्य से, हमने अपनी सीमाओं के भीतर लिथियम भंडार की पहचान कर ली है और लिथियम बैटरी विनिर्माण के लिए एक सफल पीएलआई बोली हासिल की है।

उपर्युक्त मुद्दे ऊर्जा परिवर्तन की राह में आने वाली बाधाओं को रेखांकित करते हैं, जिन्हें मेरी अध्यक्षता में गोवा में संपन्न जी-20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक के दौरान हल किया गया।

पिछली किसी भी जी-20 बैठक की तुलना में अधिक मुद्दों पर सहमति होने के कारण यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। हमने ऊर्जा परिवर्तन का रुख करते हुए ऊर्जा पहुंच के सर्वोपरि महत्व को स्वीकार किया। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि जब तक वैश्विक स्तर पर 773 मिलियन लोग ऊर्जा तक पहुंच से वंचित हैं, तब तक ऊर्जा परिवर्तन को पूर्ण नहीं माना जा सकता। हमने ऊर्जा संक्रमण प्रयासों के साथ-साथ ऊर्जा सुरक्षा, पहुंच और सामर्थ्य को आगे बढ़ाने के महत्व को सामूहिक रूप से स्वीकार किया है। हमने प्राकृतिक परिस्थितियों के आधार पर समानता और विभेदित जिम्मेदारियों पर जोर देते हुए पेरिस समझौते और उसके तापमान लक्ष्य के पूर्ण कार्यान्वयन के माध्यम से जलवायु परिवर्तन की समस्या को हल करने की आवश्यकता पर भी सहमति प्रकट की है। सभी मंत्रियों ने ऊर्जा दक्षता सुधार की वैश्विक दर को दोगुना करने के लिए एक रोडमैप तैयार करने पर प्रतिबद्धता जताई और भारत की अध्यक्षता के तहत तैयार की गई "2030 तक ऊर्जा दक्षता सुधार की वैश्विक दर को दोगुना करने संबंधी स्वैच्छिक कार्य योजना" को स्वीकार किया।

इसके अलावा, हमने नवीकरणीय ऊर्जा उपकरणों और महत्वपूर्ण खनिजों के लिए विश्वसनीय और विविध आपूर्ति श्रृंखलाओं की आवश्यकता पर जोर दिया। भविष्य के लिए ईंधन के रूप में शून्य और कम उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों से उत्पादित हाइड्रोजन के महत्व को स्वीकार किया गया। सभी मंत्रियों ने शून्य और कम उत्सर्जन प्रौद्योगिकियों से उत्पादित हाइड्रोजन और अमोनिया के लिए मानकों को सुसंगत बनाने की आवश्यकता पर सहमति प्रकट की और इसमें निष्पक्ष और खुले व्यापार की वकालत की। मंत्रियों ने भारत की अध्यक्षता के तहत शुरू किए गए हाइड्रोजन पर जी-20 उच्च-स्तरीय स्वैच्छिक सिद्धांतों को अंगीकार किया। उभरती ऊर्जा संक्रमण प्रौद्योगिकियों को वहन करने की क्षमता और न्यायसंगत पहुंच को विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए आवश्यक माना गया, और इसलिए प्रौद्योगिकी साझा करने के लिए क्षेत्रीय बहुपक्षीय और सार्वजनिक-निजी नेटवर्क तैयार करना आवश्यक है।

विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए ऊर्जा परिवर्तन के लिए कम लागत वाले वित्तपोषण तक पहुंच को महत्वपूर्ण माना गया। मंत्रियों ने इस संबंध में भारत की अध्यक्षता के तहत तैयार की गई "ऊर्जा परिवर्तन के लिए कम लागत वाले वित्तपोषण" से संबंधित रिपोर्ट का संज्ञान लिया। ऊर्जा मंत्रियों की यह बैठक अत्यधिक सफल रही। इस बैठक के उत्कृष्ट आयोजन के लिए भारत की एक स्वर से प्रशंसा की गई। हमारे लिए दो महत्वपूर्ण निष्कर्ष रहे-भारत ऊर्जा परिवर्तन के क्षेत्र में अग्रणी और ग्लोबल साउथ की आवाज बनकर उभरा है।

-आर.के. सिंह
केंद्रीय विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री

मुख्य गोगामेड़ी में गोगा नवमी पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

चूरू, (कासं)। शहर की मुख्य गोगामेड़ी में शुक्रवार को गोगा नवमी के पावन पर्व पर श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। यहां ऐतिहासिक प्राचीनतम गोगामेड़ी में लोक देवता गोगाजी महाराज का मेले का आयोजन किया गया।

मेले में गोगा भक्तों द्वारा हाथों और गले में सर्प व गोईरा डालकर किया गया नृत्य आकर्षण का केंद्र रहा। गोगा भक्तों ने हाथों में निशान लेकर ढोल बाटका व डेंरु की धुन पर नाचते गाते एक झुंड के रूप में गोगामेड़ी पहुंचकर निशानों को धोक लगाई। आपको बता दें कि इस मुख्य गोगामेडी में शुक्रवार सुबह से ही गोगा भक्तों की लंबी-लंबी कतारे लगनी शुरू हो गई जो शाम तक मेले का रूप धारण कर लिया। ज्ञात रहे कि यह चूरू का ऐतिहासिक मेला है। इस मेले के अवसर पर चूरू जिला कलेक्टर की ओर से सार्वजनिक अवकाश घोषित होता है। क्योंकि इस गोगा नवमीं मेले के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था देखते ही बनती है। इस मेले में चूरू सहित आस.पास के गांवों की गोगामेड़ियों के भक्त अपने निशान लेकर आते हैं। मेले को मध्य नजर रखते हुये जिला प्रशासन ने व्यवस्थाओं की चाक. चौबन्द व्यवस्था की है।

चूरू में हाथों और गले में सर्प डालकर डेंरू की धुन पर नृत्य करते श्रद्धालु पहुंचे।

- **मेले में गोगा भक्तों की ओर से हाथों और गले में सर्प व गोईरा डालकर किया गया नृत्य आकर्षण का केंद्र रहा**

इसमें मेला कमेटी द्वारा पीने के पानी, गोगा भक्तों के लिये दर्शन की व्यवस्था, प्रसाद की व्यवस्था सहित एहतियात के तौर पर पुलिस प्रशासन की भी माकूल व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर भाजपा व कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा गोगा भक्तों का सम्मान भी किया गया। कांग्रेस की ओर से सभापति पायल सैनी, ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य तनवीर खान, पूर्व सभापति गोविन्द महनसरिया, बीसूका सदस्य नेता मोहम्मद हुसैन निर्वाण व नारायण बालाण ने निशान लेकर आये सभी भक्तों का माल्यार्पण कर व प्रतीक चिन्ह् प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर पूर्व नगर अध्यक्ष लालचंद दईया, महेश शर्मा, विनोद सैनी, ज्योति सिंह, दीपिका सोनी, दीपिका सेन, ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, कुलदीप सैनी सहित पार्षदए पार्टी कार्यकर्ता व प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इसी क्रम में भाजपा की ओर से जिलाध्यक्ष हरलाल सहारण, युवा नेता पराक्रम राठौड़ ने भक्तों का माल्यार्पण कर व प्रतीक चिन्ह् प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विधानसभा संयोजक पदमसिंह राठौड़, प्रधान दीपचन्द राहड़, जिला महामंत्री भास्कर शर्मा, हेमसिंह शेखावत, नरेन्द्र कंवल, पूर्व सभापति विजय कुमार शर्मा, पूर्व प्रधान विक्रम कोटवाद, प्रदेश एससी मोर्चा मंत्री सीताराम लुगरिया, उपजिला प्रमुख महेन्द्र न्यौल, नेता प्रतिपक्ष विमला गढ़ वाल, मण्डल अध्यक्ष सुरेश सारस्वत व दीनदयाल सैनी सहित पार्टी के पार्षद, जिला पदाधिकारीए मण्डल पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

जवाई बांध लगा छलकने, गेट खोलने का अल्टीमेटम दिया

जालोर/पाली, (कासं)। पश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा बांध जवाई बाघ का गेज शुक्रवार को बढ़ने के साथ बांध ओवरफ्लो होकर छलकने पर गेट खोलने को लेकर जल संसाधन विभाग ने जवाई नदी के किनारे रहने वाले लोगो को सर्तक रहने की हिदायत दी।

अधिशाषी अभियंता जवाई नहर सुमेरपुर ने बताया कि शुक्रवार को प्रात: 8 बजे 61.05 फिट आंका गया है, जवाई बांध का कुल गेज 61.25 फिट है। बांध मात्र 0.20 फिट ही खाली है। जवाई बांध में सेई बाघ का जल डाइवर्ट किया जाने से पानी की आवक निरन्तर जारी है। सेई बाघ पर सेई टनल को गहरा करने के कार्य को करवाया जाना है।

इसलिए सेई बाघ से निरन्तर पानी जवाई नदी के माध्यम से छोडा जाना भी आवश्यक है। इन परिस्थियों में जवाई बांध के गेटो को आगामी दिनों में किसी भी समय खोला जा सकता है। इसलिए जवाई नदी के आस पास के गाँव तथा आमजन को सूचित किया जाता है कि नदी तथा बांध के आस पास न जावे तथा घर से बाहर जाने वाले व्यक्ति सुरक्षित स्थान पर रहे। साथ ही किसान व मवेशी पालक अपनी मवेशियों को लेकर नदी व बाघ के आस पास न जावे। जवाई बांध ओवरफ्लो होकर छलकने से बांध के सभी गेट से ओवरफ्लो पानी बहता नजर आ रहा है। यदि सेई बांध से पानी की आवक लगातार जारी रही, जवाई बांध के गेट खेले जायेगे। जिससे नदी किनारे रहने वालो लोगो को नुकसान उठाना पड़ सकता है।

राशिफल शनिवार 9 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, आर्द्रा नक्षत्र दिन 2:26 तक, व्यतिपात योग रात्रि 10:35 तक, वणिज करण प्रात: 6:25 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रात: 6:25 से सांय 7:19 तक है। आज व्यतिपात पुण्य, अश्वत्थ मारूती पूजन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:46 से 9:19 तक, चर 12:24 से 1:57 तक, लाभ-अमृत 1:57 से 5:03 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:13, सूर्यास्त 6:35

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन अशान्त रहेगा और भागदौड़ रहेगी।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

हेमलता राजे के नेतृत्व में पदयात्रा आज रामदेवरा पहुंचेगी

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर से रामदेवरा तक 1 सितम्बर को देश-प्रदेश व मारवाड में खुशहाली, अमन चैन व भाई चारा एवं सद्भाव के लिए हेमलता राजे के नेतृत्व व अचलानन्द गिरी महाराज के सानिध्य में शुरू हुई पदयात्रा 160 किलो मीटर की दूरी तय कर शुक्रवार को मेरानी गांव पहुंची व विश्राम किया। पूर्व विधायक शेरगढ बाबू सिंह राठौड भी पदयात्रा में साथ है। शनिवार को प्रात: 5.30 बजे विश्राम स्थल पर आरती के बाद पदयात्रा पोकरण व फिर रामदेवरा के लिए प्रस्थान करेगी। उन्होंने बताया मोरानी व पोकरन में अनेक जगह पदयात्रा का स्वागत होगा व गोपाल सिंह के फार्म पर स्वागत के बाद पदयात्रा रामदेवरा पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि रामदेवरा में दर्शन व पूजा अर्चना के बाद पदयात्री पुन: जोधपर लोटेंगे।

पदयात्रा का शुक्रवार को प्रात: आरती के बाद पदयात्रा खेड़ा बागोडिया से खाना हुई। रास्ते में हेमलता राजे व अचलानन्द गिरी महाराज का खेडा बागोडिया से मुख्य सडक पर केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने अगवानी कर स्वागत किया व आशीर्वाद लिया। केन्द्रीय मंत्री कुछ देर पैदल साथ भी चले। उन्होंने पदयात्रा कार्यक्रम की सराहना की। पदयात्रा का रामदेव सेवा मण्डल ने स्वागत किया। ग्राम पंचायत लंवा की सरपंच बसन्ती देवी पालीवाल व श्री सती माता सैनिक क्षत्रिय माली संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में स्वागत में पूर्व प्रधान सुनिता भाटी, किशन सिंह भाटी, महावीर सिंह गंठिया, छोटू सिंट नाडसर, दीपक बांगडी, चिरंजीलाल पालीवाल, भंवरलाल पालीवाल, मदन सेन, राजेन्द्र पालीवाल, पूर्व सरपंच मूलाराम प्रजापत, सेवा समिति अध्यक्ष श्रेयाश परिहार, बाबूलाल सांखला, प्राचार्य आईबक्ष पालीवाल ने ग्राम पंचायत डेडिया की ओर से सरपंच चतुर सिंह ने बाबा रामदेव मित्र मण्डल डोडिया द्वारा भी स्वागत किया व पुष्प वर्षा की गई।

अचलानन्द गिरी महाराज के सानिध्य में शुरू हुई पदयात्रा 160 कि. मी. की दूरी तय कर मेरानी गांव पहुंची।

- **खेड़ा गोलिया में जलशक्ति मंत्री शेखावत ने किया स्वागत**